جنوری ۲۰۱۱ء

ماہنامہ شعاع عمل لکھنؤ

قَالَ اللّٰهُ تَبَارَكَ وَتَعَالٰی قَدْ جَاءَكُمْ مِنَ اللّٰهِ نُوْرٌ وَكِتَابٌ مُبِيْنٌ

بے شک تمہارے پاس اللہ کی طرف سے نور آیا ہے اور روشن کتاب



اللّٰهُمَّ اجْعَلْنِي عِنْدَكَ وَجِيهًا بِالْحُسَيْنِ عليه السلام فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَة



نورہدایت فاؤنڈیشن، حسینیۂ غفرانمآب، چوک، لکھنؤ۔۳

R.N.I. No. UPBIL/2004/13526
Postel Regd.No. SSP/LW/NP-75/2008-10 Dispatch Date: 2 & 6 of Every Month

SHUA-E-AMAL

Lucknow

शुआ-ए-अमल

हिन्दी, उर्दू मासिक पत्रिका लखनऊ

JANUARY 2011





NOOR-E-HIDAYAT FOUNDATION

Imambara Ghufran Maab, Chowk, Lucknow-3 (U.P.) INDIA, Ph.:0522-2252230

बिस्मेही तआला

नूरे हिदायत फ़ाउण्डेशन की

इस्लामी, इल्मी और तहक़ीक़ी

हिन्दी, उर्दू मासिक पत्रिका

जनवरी–2011

शुआ–ए–अमल

"लखनऊ"

जिल्द 7 — शुमारा 7

केयामे इदारा

15 जमादिलऊला 1424 हि० / 16 जुलाई 2003 ई०

इजरा–ए–रिसाला

15 जमादिलऊला 1425 हि० / जुलाई 2004 ई०

संरक्षक

मौलाना सै. कल्बे जवाद नक़वी साहब

सम्पादक

सै. मुस्तफ़ा हुसैन नक़वी 'असीफ़' जायसी

मिलने का पता

नूरे हिदायत फ़ाउण्डेशन

इमामबाड़ा हज़रत गुफ़रानमआब, मौलाना कल्बे हुसैन रोड, चौक, लखनऊ – 3

Phone No: 0522-2252230 — 0522-4062731 Mobile No: 09335276180 — 09335996808

सै. कल्बे जवाद नक़वी प्रिन्टर, पब्लिशर और प्रोपराइटर ने मासिक शुआ–ए–अमल (उर्दू, हिन्दी) निज़ामी आफ़सेट प्रेस विक्टोरिया स्ट्रीट लखनऊ से छपवाकर आफ़िस नूरे हिदायत फ़ाउण्डेशन इमामबाड़ा गुफ़रानमआब मौलाना कल्बे हुसैन रोड लखनऊ–3 से प्रकाशित किया। सम्पादक : सै० मुस्तफ़ा हुसैन नक़वी 'असीफ़ जाएसी'।

Per copy 20/- Annual 200/-



R.N.I. No.
UPBIL/2004/13526



Postal Regd. No.
SSP/LW/NP-75/2008-10



WEBSITE:
www.noorehidayatfoundation.com
www.al-ijtihaad.com



E_mail:
noorehidayat@yahoo.com
noorehidayat@gmail.com

ज़रे सालाना

1- यूरोप, अमरीका, कनाडाः
80 अमरीकी डालर
2- ख़लीजी मुमालिकः
60 अमरीकी डालर
3- एशिया, पाकिस्तानः
40 अमरीकी डालर
4- पाकिस्तान ज़मीनी डाकः
20 अमरीकी डालर

लाइफ़ मेम्बरशिपः 4000/-

फ़ेहरिस्ते मज़ामीन

जनवरी 2011ई०

मुहर्रमुल हराम 1432हि० सफ़रुल मुज़फ़्फ़र 1432हि०

हज़रत इमाम हुसैनअ० ने फ़रमायाः–

- बड़ी अज़ीम है वह मुसीबत जो इंसान के दीन पर आए।
- कितनी ही ऐसी जल्द ख़त्म हो जाने वाली लज़्ज़तें हैं जिनके नतीजे में एक लम्बा रंज और अफ़सोस है।
- ज़िन्दगी अक़ीदा और पैहम अमल का नाम है।

क़तीलुल अबरा

(कुश्त-ए-गिरया पर अक़ीदत के चन्द आँसू)

आयतुल्लाहिलउज़्मा सैय्यिदुलउलमा सै० अली नक़ी नक़वी ताबा सराह
हिन्दी रूपः डॉ आरिफ अब्बास

मुहर्रम के महीने का ग़म से भरा हुआ चाँद असामान पर दिखाई दिया। घर-घर मज़लूमे कर्बला की सफ़े मातम बिछ गई। सदियों के ज़ख़्म जिन्होंने पाक अक़ीदत मुसलमानों के दिलों में घर कर लिया है, ताज़ा हो गए। हर क़ौम अपने मज़हब के मुवाफ़िक़ इसका असर लेती है। कर्बला में बेगुनाह शहीद हो जाने वाला मज़लूम, था भी इस क़ाबिल कि उसका रंज आलम को गिरवीद-ए-तासीर बना ले। क़ुदरत ने भी इस असर की बक़ा का एहतेमाम किया। दामने उफ़ुक़ को हमेशा के लिए शफ़क़ से ख़ून आलूद बनाकर उस ख़ूने नाहक़ का गवाह बना दिया।

शिया व सुन्नी लोगों को जाने दो, वह तो रसूले पाक[स०] का कलमा पढ़ते और हुसैने[अ०] मज़लूम की मुहब्बत के दावेदार हैं, हिन्दू और पारसी क़ौमें भी इस रंज में हिस्सा लेती और शहीदे कर्बला की मज़लूमियत का तज़किरा करती हैं।

मगर अफ़सोस है कि इस्लाम का दावा करने वाले बाज़ नाम नेहाद लोग इस मुसीबत का असर मिटा देने के लिए ऐड़ी चोटी का ज़ोर लगाते नज़र आते हैं। ये बात और है कि उनकी इस कोशिश पर पानी फिर जाता है और क़ुदरत के मुक़ाबले में नाकाम हो जाते हैं।

मज़लूमे कर्बला की ताज़ियादारी पर तरह-तरह के एतेराज़ात किए जाते हैं और अशर-ए-मुहर्रम के ज़माने में मुख़तलिफ़ इश्तेहारात व अख़बारात के ज़रिए से अक़ीदत केश मुसलमानों को इस कारे ख़ैर से रोका जाता है।

ताज़िया को बुत परस्ती कह कर तौहीद के मनाफ़ी बतलाया जाता है और ताज़िये के एहतेराम का नाम शिर्क रखा जाता है। कभी उसको तस्वीर का लक़ब देकर हुरमत का फ़तवा दिया जाता है और कभी बिदअत बताकर उस से सीधे सादे लोगों को मुतनफ़्फ़िर किया जाता है। शिर्क और बुत परस्ती का एतेराज़ हक़ीक़त में नजदी वहाबियों से हासिल किया हुआ एक सबक़ है जो आमोख़्ता के तौर पर बार-बार दुहराया जाता है। जो लोग अस्ल क़ुब्बा व क़ुबूर के एहतेराम को बुत परस्ती कहते हैं, उन से इसकी नक़्ल के बारे में कौन सी उम्मीद हो सकती है लेकिन अब हक़ीक़त बेनक़ाब हो चुकी है। वहाबियों की रद में जो-जो किताबें लिखी जा चुकी हैं, उन्होंने इस एतेराज़ को मकड़ी के जाले की तरह उड़ा दिया है। हम ने अपनी किताब ''कश्फ़ुन्नक़ाब अन अक़ाएदि इब्ने अब्दुल वहाब'' में तफ़सील से इस क़ौल की रद कर दी है।

ग़ैर जानदार चीज़ों की तसवीर का जायज़ होना सही बुख़ारी और सही मुस्लिम से साबित है और ज़ाहिर है कि ताज़िया क़ब्रे हज़रत सैय्यिदुश्शोहदा[अ०] की नक़्ल है जो जानदार नहीं है। बिदअत भी बइत्तेफ़ाक़े उलमाए अहलेसुन्नत वाजिब, मुस्तहब और मकरूह हो सकती है। लाज़िम नहीं है कि हराम ही हो वरना तरावीह की नमाज़ एक नाक़ाबिले तावील गुनाह क़रार पाएगी।

सबसे ज़्यादा मुग़ालते वाली बात ये है कि किसी मैय्यित के ग़म में गिरया करना मना है और हादीसों से इसका नाजायज़ होना साबित है। हम इस वक़्त इसी मौज़ू

पर क़लम उठाना चाहते हैं और बड़े फ़िरक़े के अकाबिर की किताबों से रोने का जवाज़ साबित करते हैं। उम्मीद है कि इन्साफ़ के साथ अहले इस्लाम इस मुख़्तसर तहरीर को देखकर अपने नबी के नवासे पर गिरया व ज़ारी में कोताही न करेंगे।

आम मुसलमानों के नुक़त-ए-नज़र से सबसे पहले जो चीज़ इस क़ाबिल है कि सरे तसलीम उसके सामने झुक जाए, वह अल्लाह की किताब और रसूल[स०] का क़ौल, फेल और तक़रीर है। इसके बाद सहाबा केराम की सीरत और ताबईन का तर्ज़े अमल है। इनमें से अगर एक चीज़ मौजूद हो तो मतलब के साबित करने के लिए काफ़ी है। चे जाएकि तमाम दलीलें एक साथ किसी मतलब को साबित करें।

क़ुरआन मजीद से गिरया व ज़ारी का सुबूत

खुदावन्दे आलम जनाब याक़ूब[अ०] की हालत बयान करते हुए फ़रमाता है:

''उनकी आँखें रंजो ग़म से सफ़ेद हो गई थीं।''

(सूर-ए-यूसुफ़)

अल्लामा ज़मख़शरी तफ़सीरे कश्शाफ़ में इस आयत के ज़ेल में लिखते हैं:-

''याक़ूब की आँखें यूसुफ़ की जुदाई में 80 साल तक ख़ुश्क नहीं हुईं, हमेशा आँसुओं से तर रहती थीं हालांकि उनसे बढ़कर उस वक़्त ख़ुदा का मुक़र्रब बन्दा कोई न था।''

और इसी तग़ैय्युर में जनाब रिसालतमआब[स०] से रिवायत है कि हज़रत जिब्रील से पूछा कि याक़ूब का रंज यूसुफ़ की जुदाई में किस हद पर था? उन्होंने कहा कि सत्तर पिसर मुर्दा औरतों के बराबर। हज़रत ने फ़रमाया कि सवाब उनको किस हद तक मिला। जवाब दिया कि सौ शहीदों के बराबर सवाब अता किया।

इस आयत में बज़मीम-ए-तफ़सीर चन्द बातों का इन्केशाफ़ होता है:-

1- हज़रत याक़ूब[अ०] बावजूद मरतबे के यूसुफ़ की जुदाई में 80 बरस तक दिन रात रोते रहे।

2- क़ुर्आन मजीद में इस फेल का तज़किरा बग़ैर किसी एतेराज़ के दर्ज किया गया है जिस से मालूम होता है कि अल्लाह की नज़र में ये काम तारीफ़ के क़ाबिल था, वरना क़ुरआन जो उम्मते इस्लामिया की तालीम के लिए इन वाक़िआत का तज़किरा करता है, ज़रूर इस पर एतेराज़ करता।

3- उनके गिरया व बुका ने अज्रो सवाब में कोई कमी नहीं कि बल्कि उनके रंजो ग़म के तज़किरे के बाद सवाब का ज़िक्र करना बतलाता है कि ये हुज़्नो ग़म उनका इबादत था।

रसूल[स०] का अमल

खुद जनाब रिसालत मआब[स०] मुसीबत के वक़्त में बेचैन होकर रो दिये हैं और बलन्द आवाज़ से गिरया फ़रमाया है। इस्लामी किताबें इस तरह के वाक़िआत से भरी हुई हैं, हम इस मौक़े पर कुछ हवालों पर इक्तेफ़ा करते हैं।

1- इब्ने अब्दुल बर ने इस्तीआब में लिखा है: *''जाबिर बिन अब्दुल्लाह से रिवायत है कि जब हज़रत रसूल[स०] ने हमज़ा को मक़तूल पाया तो रोने लगे और जब उनके बदन के कटे हुए हिस्सों पर नज़र पड़ी तो चीख़ मार कर रोए।''*

अली बिन बुरहानुद्दीन शाफ़ई मुहद्दिस ने 'इन्सानुल उयून' में तहरीर किया है:-

इब्ने मसूद से रिवायत है कि हम ने हज़रत रसूल[स०] को कभी इस शिद्दत से रोते नहीं देखा जैसे हज़रत हमज़ा[अ०] पर गिरया फ़रमाया। क़िब्ला रूख़ लाश को रख कर लाश के क़रीब खड़े हुए और एक चीख़ मारी यहाँ तक कि ग़श आ गया और हज़रत यूँ नौहा पढ़ रहे थे:-

''ऐ रसूले ख़ुदा के चचा! ऐ ख़ुदा और रसूल के शेर! ऐ हमज़ा! ऐ नेक बातों के करने वाले! ऐ दीन पर से मुसीबतों के दूर करने वाले! ऐ रसूल[स०] के दुश्मनों को हटाने वाले!''

और अल्लाामा इब्ने अबिल हदीद मोतज़िली ने वाक़िदी से नक़्ल किया है कि:-

हज़रत रसूले ख़ुदा[स०] की उहद के रोज़ ये हालत थी कि जब सफ़िया (हमज़ा की बहन) *रोती थीं, हज़रत पर गिरया तारी हो जाता था और जब रोते-रोते उनके गले में फंदे पड़ने लगते थे तो हज़रत की भी वही हालत*

हो जाती थी।

क्या इस से बढ़कर बेताबी और गिरया व बुका की हालत हो सकती है? इसके बाद गिरया व बुका को ख़िलाफ़े शरअ बतलाना फेले रसूल पर एतेराज़ की सूरत रखता है जो कुफ्र की हद में दाख़िल है।

दूसरा मौक़ा

हज़रत रसूल[स०] ने अपने बेटे इब्राहीम के एहतेज़ार के वक़्त गिरया फ़रमाया। चुनानचे अल्लामा इब्ने अब्दुल बर मालिकी अपनी किताब 'इस्तीआब' में लिखते हैं:-

अनस से रिवायत है कि मैंने इब्राहीम[अ०] के इन्तेक़ाल के वक़्त देखा कि उस वक़्त हज़रत रसूल[स०] की आँखों से आँसू बह रहे थे और हज़रत फ़रमा रहे थे कि "आँखें आँसू बहाती हैं और दिल को सदमा पहुँचता है लेकिन हम ऐसी बात नहीं कहते जो ख़ुदा को नाराज़ करे। ऐ इब्राहीम हमको तुम्हारा दिली सदमा है।"

इस हदीस में जिस तरह फेले रसूल[स०] से गिरया व बुका का जवाज़ साबित होता है, ज़बानी इरशाद से भी ज़ाहिर होता है कि जो कुछ भी ख़िलाफ़े शरअ है, वह ऐसे अलफ़ाज़ का ज़बान से जारी करना जो ख़ुदा की मर्ज़ी के ख़िलाफ़ हो, लेकिन आँखों से आँसुओं का बहाना या मुसीबत का असर लेना किसी तरह नाजाएज़ नहीं हो सकता।

इस रिवायत को हाफ़िज़ इब्ने जौज़ी हंबली ने अपनी किताब 'तलबीस इबलीस' में भी नक़्ल किया है और सही बुख़ारी (जिल्द अव्वल पेज-148) में हज़रत रसूल[स०] की गिरया व ज़ारी के वाक़िए को नक़्ल करके लिखा है:-

अब्दुर्रहमान बिन औफ़ ने (एतेराज़ किया और) कहा कि आप ऐ अल्लाह के रसूल[स०]! और इस तरह गिरया करें। हज़रत ने फ़रमाया: "ऐ इब्ने औफ़! ये रिक़्क़ते क़ल्ब की अलामत है। फिर दोबारा गिरया फ़रमाया और कहा कि बिला शुबह आँखें रो रही हैं और दिल ग़मगीन है।

इस से मालूम हुआ कि बावजूद सहाबी के टोकने के हज़रत रसूल[स०] ने गिरया फ़रमाया और अपने अमल से ज़ाहिर किया कि गिरया किसी तरह ख़िलाफ़े शरअ नहीं है।

तीसरा मौक़ा

मिशकात में सही मुस्लिम से मनक़ूल है।

अबूहुरैरा से रिवायत है कि हज़रत रसूल[स०] ने अपनी माँ की क़ब्र की ज़ियारत की और ख़ुद भी रोए और अपने गिर्द के लोगों को भी रुलाया।

अगरचे साबिक़ की हदीस से किसी मुसीबत के वाक़े होने पर गिरया का जवाज़ साबित हो चुका था। लेकिन ये हदीस इस बात को बतलाती है कि किसी पुरानी मुसीबत को याद करके रोना भी जाएज़ है बल्कि दूसरों को रुलाना भी जाएज़ है इस से मजलिसे अज़ा के जाएज़ होने पर बहुत कुछ रौशनी पड़ती है।

चौथा मौक़ा

ज़ैद बिन हारसा और जाफ़रे तैयार और अब्दुल्लाह बिन रवाहा की शहादत की ख़बर सुनकर हज़रत[स०] ने गिरया फ़रमाया। इसको इमाम बुख़ारी ने किताबुल जनाएज़ के पेज-3 पर अपनी सही में नक़्ल कया है और इब्ने अब्दुल बर ने 'इस्तीआब' में ज़ैद बिन हारसा के हालात में लिखा है कि:-

हज़रत रसूल[स०] ने जाफ़र और ज़ैद पर गिरया किया और फ़रमाया हाए मेरे भाई और मेरे मोनिसे तनहाई और मुझ से बाते करने वाले।

पाँचवां मौक़ा

हज़रत की किसी साहबज़ादी[1] का इन्तेक़ाल हो गया था हज़रत क़ब्र पर बैठे *'व-ऐनाहु तदमआन'* इस हाल में कि हज़रत की आँखों से आँसू बह रहे थे।

(सही बुख़ारी, जिल्द-1 पेज-146)

छटा मौक़ा

सही बुख़ारी जिल्द-1 पेज-146 और सही मुस्लिम, बाबुल बुका अलल मैय्यित में मज़कूर है कि हज़रत की किसी साहबज़ादी के बच्चे का इन्तेक़ाल हो गया था तो हज़रत की आँखों से आँसू जारी हो गए।

(1) रसूल[स०] की किसी साहबज़ादी का हज़रत फ़ातिमा ज़हरा[स०] के अलावा होना मुसल्लम नहीं है मुमकिन रिब्बिया पर बिन्त का इतलाक़ हुआ हो।

साद बिन अबी वक़ास ने एतेराज़ किया: ऐ अल्लाह के रसूल^{स०}! ये क्या? फ़रमाया: ये रिक़्क़ते क़ल्ब है जिसको ख़ुदा ने अपने बन्दों के दिल में पैदा कर दिया है। ख़ुदा उन ही बन्दों पर रहम करता है जिनके दिल में रहम हो। इस हदीस से साबित होता है कि गिरया फ़ितरी अम्र है।

सातवाँ मौक़ा

सही बुख़ारी व सही मुस्लिम में अब्दुल्लाह बिन उमर से रिवायत है: साद बिन अबी वक़ास बीमार हुए और हज़रत रसूल[स०] अस्हाब की एक जमाअत के साथ अयादत के लिए गए। साद को बेहोश पाया तो हज़रत रोने लगे जिसकी वजह से तमाम मजमे पर गिरया तारी हो गया।

क्या इसके बाद गिरया व ज़ारी के जवाब में शक करना रसूल[स०] के अफ़आल और शरई अहकाम का मुक़ाबला नहीं है।

तक़रीरे रसूल[स०]

जिस तरह ख़ुद रिसालतमआब[स०] के फेल से रोने का जवाज़ साबित है, उसी तरह दूसरों को किसी मुसीबत पर रोते हुए देखकर रसूल[स०] का मना न करना बल्कि मना करने वाले को रोकना भी मनक़ूल है। देखो जामिउल उसूल में है:-

अहलेबैते रसूल[स०] में कोई मौत हो गई तो तमाम औरतें जमा होकर गिरया व ज़ारी करने लगीं। हज़रत उमर ने खड़े होकर सबको मना किया और रोकना शुरु किया जिस पर हज़रत रसूल[स०] ने फ़रमाया: "छोड़ दो इनको ऐ उमर क्योंकि आँखें रोती ही हैं और दिल दुख्ता ही है और अभी तो ज़मान-ए-मुसीबत कुछ दूर भी नहीं हुआ है।"

इस से मालूम हुआ कि हज़रत उमर रोने वालों को जब मना कर रहे थे तो रिसालतमआब[स०] को बुरा लगा और आपने मना किया। अगर गिरया किसी हैसियत से नाजाएज़ होता तो कभी हज़रत रसूल[स०] इसको पसन्द न फ़रमाते, कम से कम ख़ुद नहीं रोका था तो दूसरे के रोकने पर सुकूत फ़रमाते मगर इसके ख़िलाफ़ आपने मना करने से रोका जो जवाज़ की खुली दलील है।

दूसरा मौक़ा

इमाम अहमद बिन हंबल ने रुक़ैय्या रसूल[स०] की बेटी की वफ़ात पर औरतों के रोने के मुताल्लिक़ इब्ने अब्बास से जो रिवायत नक़्ल की है उसमें है:-

हज़रत उमर अपने कोड़े से औरतों को मारने लगे। हज़रत ने फ़रमाया कि छोड़ दो उनको कि रोती रहें। फिर फरमाया कि दिल और आँख से जहाँ तक ताल्लुक़ है, वह ख़ुदा की तरफ़ से है और रिक़्क़ते क़ल्ब की अलामत है और हज़रत शफ़ीर क़ब्र पर बैठ गए, हज़रत फ़ातिमा[स०] आपके पहलू में रो रही थीं तो हज़रत बमुक़तज़ाए शफ़क़त अपने कपड़े से उनकी आँखें पोछते थे।

तीसरा मौक़ा

मुसनद इमाम अहमद बिन हंबल में अबूहुरैरा से रिवायत है:-

जनाब रिसालतमआब[स०] के सामने से एक जनाज़ा गुज़रा जिसके साथ औरतें रो रही थीं। हज़रत उमर ने उनको मना किया तो रसूल[स०] ने फ़रमाया छोड़ दो इनको क्योंकि दिल को रंज पहुँचता ही है और आँखों से आँसू बहना फ़ितरी है।

चौथा मौक़ा

अल्लामा इब्ने अब्दुल बर क़ुर्तुबी मालिकी ने इस्तीआब में अबुर्रबीअ् अब्दुल्लाह बिन साबित अन्सारी के हाल में लिखा है कि:-

हज़रत रिसालतमआब[स०] ने उनको अपनी क़मीस का कफ़न दिया और ज़ुबैर बिन ऐनक सहाबी ने जब औरतों को रोने से मना किया तो हज़रत ने फ़रमाया कि छोड़ दो इनको ऐ अबू अब्दुर्रहमान, जब तक अबुर्रबीअ् का जनाज़ा उनके दरमियान है, ये रोती रहें।"

इस रिवायत को अलफ़ाज़ के इख़्तेलाफ़ के साथ इब्ने असीर जज़री ने उसदुल ग़ाबा में भी नक़्ल किया है।

पाँचवां मौक़ा

इस्तीआब में इब्ने अब्दुल बर पेज-380 जिल्द

अव्वल में जाबिर बिन अब्दुल्लाह अन्सारी से रिवायत है किः-

''उहद के दिन जब मेरे बुजुर्ग बाप की लाश लाई गई और मेरी फूफी रोती हुई आईं तो मैं भी रोने लगा। लोग मुझे मना करने लगे। मगर रसूलस॰ ने मुझको मना नहीं किया और फ़रमाया कि तुम लोग रोओ या न रोओ ख़ुदा की क़सम फ़रिश्ते अपने परों का साया किये रहे यहाँ तक कि तुम ने लाश को दफ़्न किया।''

इस रिवायत को अल्लामा इब्ने असीर जज़री ने भी अपनी किताब 'उस्दुल ग़ाबा' (जिल्द-3) में थोड़े फ़र्क़ के साथ नक़्ल किया है।

इन रिवायतों से साफ़ ज़ाहिर है कि गिरया व बुका से मना करना बिल्कुल हज़रत रसूलस॰ की मुख़ालेफ़त है। बज़ाहिर हैरत होती है कि सहाबा को कौन सी ज़िद थी कि बावजूद रसूलस॰ की मुतावातिर तम्बीह के वह गिरया व बुका से मना करते रहते थे और रसूल की बार-बार मुमानेअत पर तवज्जो न करते थे लेकिन इसकी हक़ीक़त इतिहास की किताबों को देखने से वाज़ेह हो जाती है। हक़ीक़त में गिरया व बुका से मुमानेअत एक जाहिलियत की रस्म थी जो अक्सर अफ़राद में तबीअते सानिया के तौर पर राएज हो गई थी। अहले जाहिलियत का अक़ीदा था कि गिरया व बुका की वजह से जोशे इन्तेक़ाम ख़त्म हो जाता है और बुज़दिली पैदा होती है। इसकी वजह से वह लोग सख़्ती से अपनी औरतों को रोने से बाज़ रखा करते थे और इसका मक़ामे फ़ख़्र में ज़िक्र किया करते थे। अरब का शायर अपने माया नाज़ महासिन का ज़िक्र करते हुए कहता हैः-

''ख़ुदा की पनाह इस बात से कि हमारी औरतें नौहा करें किसी मरने वाले के ऊपर, या हम क़त्ल से चीख़ उठें।''

इस आदत का फ़लसफ़ा अगरचे मज़कूरा बाला उसूल पर मबनी था, लेकिन धीरे-धीरे रोने से नफ़रत आदत बन गई और वह संगदिली और बेरहमी का पेशख़ेमा क़रार पाई। सहाबा का रोने से मना करना हक़ीक़त में तबीअत में इस आदत के पैदा होने का असर था, जिसकी वजह से रसूलस॰ का एक मरतबा बल्कि चन्द मरतबा का इरशाद भी उनकी तबीअत को न बदल सका और आख़िर उम्र तक उनमें ये आदत बाक़ी रही।

क़ौले रसूलस॰

वाक़िआत तो यहाँ बतलाते हैं कि ख़ुद रसूलस॰ ने गिरया व ज़ारी पर आमादा किया है और सहाबा को तरग़ीब दी है। चुनानचे 'मतालिबुल मोमिनीन' और 'तफ़सीरे कबीर' में मुहम्मद बिन अबी जाफ़र से नक़्ल हैः-

मुहम्म्द बिन अबी जाफ़र कहते हैं कि हमारे पास एक शख़्स अन्सार में से आया। उसने मिनजुमला और बातों के एक बात ये बयान की कि रिसालतमआब का गुज़र बनी असद की तरफ़ से हुआ। उस वक़्त वह अपने मक़तूलीने जंगे उहद पर रो रहे थे। हज़रत ने फ़रमायाः अफ़सोस हमज़ा पर कोई रोने वाला नहीं है। औरतें कहती हैं कि हम अपने घरों से निकल कर ख़ान-ए-रसूलस॰ में आए और हम ने हमज़ा पर गिरया व ज़ारी की। उस वक़्त रिसालतमआबस॰ घर में मौजूद थे और हम उनकी तस्बीह की आवाज़ सुन रहे थे। आपने हमारे पास पैग़ाम भेजा कि तुम्हारा बड़ा एहसान है।

सरख़सी ने कहा है कि हज़रत ने ये अफ़सोस इसलिए किया था कि हमज़ा उस दिन सैय्यिदुश्शोहदा थे मगर आलमे मुसाफ़िरत में इन्तेक़ाल हुआ था तो रिसालतमआबस॰ ने मरसिया पढ़वाया और किताब 'मग़ाज़ी' में है कि साद बिन मआज़ और साद बिन उबादा और मआज़ बिन जबल ने ये सुना तो अपने घराने की औरतों को ख़ान-ए-हज़रतस॰ में लाए और उन्होंने हमज़ा पर नौहा किया और उस दिन से मदीने में ये रस्म जारी हो गई कि जब कोई मरता था तो पहले हमज़ा पर गिरया व बुका कर लेते थे।

इस रिवायत को इमाम अहमद बिन हंबल ने अपने मुस्नद में इन अलफ़ाज़ में नक़्ल किया हैः-

हज़रत रसूलस॰ उहद से लौटे तो अन्सार की औरतें अपने शहीद अज़ीज़ों पर रोने लगीं। हज़रत ने फ़रमाया कि अफ़सोस हमज़ा पर रोने वाली औरतें मौजूद नहीं, हज़रतस॰ सो गए, आँख खुली तो सहाबा की औरतें

हमज़ा पर रो रही थीं, रावी कहता है कि अब तक यह रस्म है कि जब सहाबा की औरतें रोती हैं तो पहले हमज़ा पर गिरया करती हैं।"

इस रिवायत को तबरी और इब्ने असीर ने अपनी तारीख़ में और इब्ने अब्द रब्बिह क़ुर्तुबी ने 'अक़्दे फ़रीद' में और इब्ने अब्दुल बर ने 'इस्तीआब' में भी ज़िक्र किया है जिसके बाद इसके सही होने में कोई शक नहीं हो सकता।

ग़ौर के क़ाबिल ये बात है कि हमज़ा ने मुसाफ़िरत में इन्तेक़ाल किया था और कोई रोने वाला न था तो हज़रत रसूल[स०] ने अन्सार की औरतों से गिरया व बुका और नौहा कराया और ये रस्म जारी हो गई कि किसी अज़ीज़ की मौत में सबसे पहले हमज़ा पर गिरया किया जाता था तो फिर किसी मज़लूम के आलमे मुसाफ़िरत में शहीद होने और उनके अइज़्ज़ा के न रो सकने पर अगर हम गिरया व ज़ारी करें तो कौन सा एतेराज़ की कौन सी वजह है? फिर जबकि हक़ीक़त ये है कि हमज़ा की मज़लूमियत सैय्यिदुश्शोहदा[अ०] की मज़लूमियत के सामने कोई हक़ीक़त नहीं रखती, शहीदे कर्बला पर मुसीबतों का ख़ात्मा हो गया था और यक़ीनन रसूल[स०] के दिल में हुसैन[अ०] की जितनी मुहब्बत थी वह भी हमज़ा से ज़्यादा है। फिर हज़रत इमाम हुसैन[अ०] पर गिरया कहाँ तक खुदा व रसूल[स०] की नज़र में ममदूह व मुस्तहसन न होगा।

दूसरी रिवायत

इब्ने अब्दुल बर ने 'इस्तीआब फी अस्माइल अस्हाब' में जाफ़र बिन अबी तालिब के तज़किरे में लिखा है:-

जब हज़रत रसूल[स०] को जाफ़र की शहादत की ख़बर पहुँची तो हज़रत उनकी बीवी असमा बिन्ते उमैस के यहाँ तशरीफ़ ले गए और उनको जाफ़र का पुरसा दिया। इसी दरमियान फ़ातिमा ज़हरा सलामुल्लाहि अलैहा रोती हुई आईं और कह रही थीं: हाए मेरे चचा, रसूल[स०] ने फ़रमाया जाफ़र ऐसे शख़्स पर रोने वालियों को रोना चाहिए।

एक तो फ़ातिमा ज़हरा[स०] का फेल खुद हुज्जत और वाजिबुल इत्तेबा है क्योंकि ये मुअज़्ज़मा बइत्तेफ़ाके उलमाए अहलेसुन्नत आय-ए-ततहीर में दाख़िल और बक़ौल अकाबिर उलमा-ए-अहलेसुन्नत मरियम और आसिया से अफ़ज़ल थीं, इस के साथ रसूल[स०] का इस फेल से मना न करना जवाज़ की खुली निशानी है। अगर सिर्फ़ इतना ही होता तो मतलब साबित था। मगर रिसालतमआब[स०] ने अपने क़ौल से शक की गुन्जाइश बाक़ी नहीं रखी। (जाफ़र ऐसे मरतबे वाले शख़्स पर रोने वालों को रोना चाहिए) इस से मालूम होता है कि मरने वाला अगर बारगाहे अहदियत में मिस्ल जाफ़र के तक़र्रुब रखने वाला और मरातिबे फ़ज़ीलत में फ़ाएज़ हो तो उस पर रोना मुस्तहसन है। इस्लामी कुतुबे हदीस व तारीख़ से पूछो कि जाफ़र के फ़ज़ाएल को हुसैन बिन अली[अ०] के फ़ज़ाएल से कौन सी मुनासिबत है और अगर मज़लूमियत को मेयार मान लो तो कर्बला के मैदान का जंगे मौता के मारके से मुक़ाबला कर लो, ज़मीन और आसमान का फ़र्क़ नज़र आएगा।

अल्लाह का शुक्र है क़ौले रसूल, फेले रसूल, तक़रीरे रसूल, हर तरह से गिरया व बुका का जवाज़ बल्कि मुस्तहब होना साबित हो गया। मज़मून अपने हुदूद से गुज़र चुका है और मौक़ा नहीं कि क़लम को गर्दिश दी जाए।

सहाबा और ताबईन के अफ़आल और अक़्वाल से गिरया व बुका के सुबूत के लिए एक मुस्तक़िल मज़मून चाहिए। इस तरह ख़ास कर हज़रत सैय्यिदुश्शोहदा सलामुल्लाहि अलैह पर जिस तरह रसूल[स०] ने गिरया व बुका की तारीफ़ फ़रमायी है और खुद वाक़िए से क़ब्ल इस मुसीबत का असर लिया है ये एक जुदागाना मौज़ू है। फिर सहाबा और ताबईन, तबे ताबईन और अकाबिरे अहले इस्लाम ने शहादते सैय्यिदुश्शोहदा पर जिन ख़यालात और तास्सुरात का इज़हार किया है उसके लिए एक मुस्तक़िल किताब की ज़रूरत है। अगर मौक़ा हुआ तो इन मतालिब पर भी रौशनी डाली जाएगी।



है शबाब अपने लहू की आग में जलने का नाम

अल्लामा सै० मुहम्मद रज़ी साहब क़िब्ला, कराची
हिन्दी रूपः डॉ आरिफ़ अब्बास

कर्बला का रेगिस्तान आग की तरह भड़क रहा है, ज़मीन के ज़र्रे-ज़र्रे से शोले उठ रहे हैं, नहरे फ़ुरात का रेतीला साहिल दूर-दूर तक फैला हुआ है जहाँ न दरख़्तों का साया है और न कोई पनाह की जगह। नहर से कुछ फ़ासले पर नवास-ए-सरवरे कायनात और आपके पाकबाज़ साथियों के कुछ ख़ेमे लगे हुए हैं मगर इमाम हुसैन^{अ०} और आपके तमाम जाँनिसार साथी भूक और प्यास से निढाल हैं। सामने नहरे फ़ुरात बह रही है मगर कूफ़ा की बेरहम फ़ौज के सिपाही नहर पर पहरा दे रहे हैं ताकि कोई शख़्स भी उनकी इजाज़त के बग़ैर पानी की एक बूँद भी न पी सके। उधर हुसैनी ख़ेमों में सब के सब प्यास से हलाक हो रहे हैं। छोटे-छोटे बच्चे सूखे हुए ख़ाली मश्कीज़े हाथों में लिये हुए ''अल-अतश अल-अतश'' (हाय प्यास, हाय प्यास) की फ़रियाद कर रहे हैं मगर इस भयानक गर्मी, भूक और प्यास के बावजूद उनमें कोई भी यज़ीद की इताअत और उसके शैतानी लश्कर के सामने गर्दन झुकाने के लिए तैयार नहीं है। मंचले जवान नंगी तलवारें लिए हुए मौत की आँखों में आँखें डाले शहादत का जाम पीने के लिए बेचैन हैं। बूढ़े कमर कसे हुए जेहाद के शौक़ में तड़प रहे हैं। माएँ अपने छोटे-छोटे बच्चों को लिए हुए इमाम आली मक़ाम के हुक्म का इन्तेज़ार कर रही हैं, और इजाज़त के लिए परेशान हैं कि जल्दी से उन्हें राहे हक़ में क़ुर्बानी के लिए पेश कर दें। एक शहीद की लाश आई और अभी उसकी बेवा की आँखों के आँसू ख़ुश्क भी न हुए थे कि उस शहीद का एक बहुत कमसिन बच्चा कमर में छोटी सी तलवार लगाए हुए सैय्युदुश्शोहदा^{अ०} की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और नन्हें हाथ जोड़कर जंग के मैदान में जाने की इजाज़त माँगने लगा। इमाम^{अ०} ने साथियों से फ़रमाया। अभी इस बच्चे का बाप शहीद हुआ है ऐसा न हो कि इसकी माँ इसकी शहादत पर राज़ी न हो। ये सुनते ही उस बच्चे ने अर्ज़ कीः ऐ हमारी जान और माल के मालिक रसूले ख़ुदा^{स०} के बेटे! मेरी कमर में ये तलवार तो मेरी माँ ही ने लगाई है और मुझे शहादत के लिए सजा बनाकर आपकी ख़िदमत में भेजा है। फिर जब ये आवाज़ उसकी माँ ने सुनी तो उसने फ़रियाद की कि आक़ा ये मेरा हक़ीर हदिया है इसे वापस न कीजिए। फ़रज़न्दे अली^{अ०} व फ़ातिमा^{स०} लोगों से कह रहे थे कि तुम मेरी वजह से क्यों अपनी जानें गंवाते हो। मेरी इजाज़त है, तुम मुझे अकेला छोड़कर अम्नो अमान की जगह तलाश कर लो और जिधर चाहे चले जाओ मगर इमामत की शमा के परवाने बिफरे हुए शेरों की तरह शहादत का जाम पीने पर तुले हुए हैं। वहब बिन अब्दुल्लाह कल्बी अपनी दुलहन और अपनी माँ के साथ हुसैनी लश्कर में थे। सिर्फ़ सत्तरह दिन हुए थे उनकी शादी को। वहब के दोनो हाथ मैदान में लड़ते-लड़ते कट गए। अपने ख़ून में ज़मीन पर गिर कर लोटने लगे। ये देखकर दुलहन भी मैदान में निकल आई और वहब की हिफ़ाज़त करने लगी मगर किसी ने उस शेरदिल औरत के सर पर गुर्ज़ मारकर उसे भी शहीद कर दिया। वहब का सर काटा गया माँ ख़ेमे के दरवाज़े पर खड़ी शहादत का मन्ज़र देख रही थी। ज़ालिमों ने बेटे का सर माँ की तरफ़ फेंक दिया। उस बहादर ख़ातून ने सर को हाथों पर लेकर सीने से लगा लिया और ख़ून भरे गालों को चूमा और आसमान की तरफ़ देखकर कहने लगी। ऐ मेरे मालिक! मेरी इस क़ुर्बानी को क़ुबूल फ़रमा। फिर उस सर को मैदान की तरफ़ फेंक कर कहने लगी। मैंने जो क़ुर्बानी अल्लाह की राह में पेश कर दी अब उसे वापस नहीं लूँगी। मददगारों की क़ुर्बानियों के बाद बनी हाशिम की क़ुर्बानियों का सिलसिला शुरु हुआ। फिर वह वक़्त भी आ गया जब अली की बेटी हज़रत ज़ैनब^{स०} के फ़रज़न्द औन^{अ०} और मुहम्मद^{अ०} मैदान में आए और दोनों ज़ख़्मी होकर ज़मीन पर गिरे। इमाम हुसैन^{अ०} भाँजों की लाशों

शेष....... पेज 15 पर

हमारी पत्रकारिता*: एक नज़र

मु० र० आबिद

* यहाँ हमारी पत्रकारिता के माने में विश्वपत्रकारिता, मुस्लिम पत्रकारिता, भारतीय पत्रकारिता, उर्दू पत्रकारिता और शिया पत्रकारिता है।

भावनाओं और आशाओं का जीता-जागता बुद्धिमान संयोग बोलने को न बेचैन होगा तो और कौन होगा? फिर कहीं उसे बोलने के साथ 'कहना' भी आ जाये तो वह ज़बान रोके, होंट सिये क्यों रहने लगा? उसकी ज़बान बस चुपके-चुपके चटख़ारे लेने के लिए नहीं होती बल्कि वह खुल भी सकती है, खिल भी सकती है, तो गुल खिला भी सकती है, फुलवारी बना सकती है, संसार में आग भी लगा सकती है, अमृत उगा सकती है, विष भी घोल सकती है। ज़बान का क्या कहना! उसके कहने का क्या कहना! अब तो जग ज़ाहिर है, ज़बान की ऐसी चलती है कि बस उसी की चलती है। यही ज़बान संसार पर राज करती है, यही राज बाँटती भी है। चाहे कहीं साम्राज्य हो, तानाशाही हो, लोकतन्त्र हो, राष्ट्रपति प्रकार का राज हो, हर जगह यही 'ज़बान राज' ही होता है, ज़बान की डिक्टेटरी चलती है।

जब मनुष्य की एक ज़बान की बात ऐसी है जिस की अनकही करने का साहस किसी में नहीं होता, तो सोचिए लेखनी/क़लम की क्या बात होगी, लिखने के क्या कहने!! ज़बान की जितनी भी चलती है इसी क़लम के बलबूते चलती है नहीं तो क़ायदे क़ानून नियम से 'ज़बानी' (मौखिक) की क्या पूछ? जहाँ ज़बान की न चले, क़लम की चलती है जो समय और स्थान की सीमाओं को भी पार कर जाती है। जहाँ ज़बान की पहुँच सिमट कर रह जाए, वहाँ से क़लम का राज शुरु होता है। इसका अन्त कहाँ हो, किसे पता! यह आदमी की शिक्षा का ईश्वरीय माध्यम जो ठहरा *'अल्-ल-म बिल क़लम'*..... वह भी *'मालम या'लम'* वाले अथाह ज्ञान का शिक्षा माध्यम।

ऐसा लगता है मनुष्य अपनी सभ्यता के पहले चरण से ही क़लम संभालने लगा, क़लम से बात करने लगा, क़लम को अपने बोल देने लगा। यह सब इतिहास पूर्व की बात है, इसलिए निश्चित रूप से कुछ कहा नहीं जा सकता। आशा है क़लम ने संभलते ही 'पत्र' ढूँड निकाला होगा (हो सकता है क़लम को ढूँड निकालने में पत्र का हाथ हो) क़लम यानी लेखनी के आगे बढ़ते क़दमों ने पत्र के एक ख़ास रूप Circular/परिपत्र/गश्तीपत्र की जान-पहचान कराई होगी। आगे सामान्य सम्बोधन वाले पत्र (जिसमें आम सन्देश या जनरुचि की सूचना हो) अधिसूचना और आदेश आते हैं। सभ्यता के विकास के साथ-साथ तकनीकी प्रगति से संचार माध्यमों को भी विस्तार मिला। वहीं क़लम के नये-नये रूप सामने आये। इसी में साधारण सूचना, अधिसूचना और गश्ती-पत्र का कुछ विकसित और सामाजिक रूप पत्रकारिता के नाम से उभरा।

साइन्स और टेक्नालॉजी और उसके अन्तर्गत संचार के तरीक़े और संचार माध्यमों की लगातार प्रगति, सामजिक नागरिक विकास और संसार के बदलते हुए दृश्य-पत्र से पत्रकारिता का विकास होता रहा। आज के IT युग ने इलेक्ट्रानिक मीडिया, कम्प्युटर और इन्टरनेट के कारण पत्रकारिता को नये आयाम से पहचान कराई।

पत्रिकाओं को प्रकाशन अवधि के आधार पर निम्नलिखित प्रकारों में बाँटा जा सकता है: (1) दैनिक (2) साप्ताहिक (3) अर्धमासिक/पाक्षिक (4) मासिक (5)द्वमासिक (6) त्रैमासिक (7)वार्षिक।

कुछ पत्र सप्ताह में दो बार भी निकलते हैं। इसी तरह कुछ पत्रिकाएं विशिष्ट अवधि की होती है मगर वे इतनी सामान्य नहीं होती, इसलिए उन्हें ऊपर के वर्गीकरण में जगह नहीं दी गई।

[यदि पत्रकारिता की आला कमान मासिक या और अधिक अवधि वाली पत्रिकाओं का पत्रकारिता से सम्बन्ध न माने, तो मुझे कोई आग्रह न होगा।]

आम धारणा से इन पत्रिकाओं की लोकप्रियता उनकी प्रकाशन अवधि के समानुपाती होती है। दैनिक साधारणतयः दूसरे दिन रद्दी की दुकान चला जाता है। साप्ताहिक और पाक्षिक पत्रिकाएं कुछ दिन के अध्ययन के लिए होती हैं। मासिक पत्रिकाएं कुछ ज़्यादा दिन और कुछ अधिक गम्भीर अध्ययन के लिए होती हैं। द्वमासिक और त्रैमासिक पत्रिकाएं आम तौर से ज्ञान-वैज्ञानिक और शोध वाली होती है, इसलिए उसी तरह के गम्भीर अध्ययन में आती है और प्रायः निजी तौर पर भी सुरक्षित रखी जाती है। यह सब आम धारणा की बात है। कहीं-कहीं कभी यह बात नहीं होती। आज समाचार-पत्र भी समाचार, समाचार-समीक्षा के अलावा बहुत कुछ ज्ञान-विज्ञान का मसाला देते हैं। इससे कम से कम ज्ञान दोस्तों में उनका मूल्य दूसरे दिन रद्दी में डालने वाला नहीं होता। फिर भी जनसाधारण में उन्हें रद्दी की दुकान जाने से कुछ रोक नहीं पाता। वहीं कुछ ऊँची रुचि वाले पाठक लाइब्रेरियों से अलग हटकर भी समाचार-पत्रों की पूरी की पूरी फ़ाइल सुरक्षित कर ले जाते हैं कि आज ऐसे अख़बारों की भी फ़ाइलें हमें मिल जाती हैं जो स्वयं कब के 'स्वर्ग' सिधार चुके होते हैं।

विषय के अनुसार पत्रिकाओं को इस तरह बाँट सकते हैं: (1) समाचार-पत्र (साधारणतयः दैनिक होते हैं परन्तु Newsletter के रूप में पाक्षिक भी हो सकते हैं।) (2) समीक्षा-पत्र जो समाचारों पर समीक्षा और खोजी समाचारों पर आधारित होते हैं। (3) साहित्यिक (4)विशेष रुचि के जैसे फ़िल्मी या खेल सम्बन्धित (5) ज्ञान-वैज्ञानिक विश्ष्टिता और शोध वाली पत्रिकाएं (6) सरकारी (ग़ज़ट) जिनमें समाचार से ज़्यादा सरकारी सूचना और शासनादेश छाये रहते हैं। इनमें कोई और प्रकार भी मिल सकते हैं जो मेरी हड़बड़ी या अज्ञानता के कारण गिनाये न जा सके।

मीडिया के आधार पर पत्रकारिता का वर्गीकरण यूँ हो सकता हैः-

(1) मुद्रणीय (2) इलेक्ट्रानिक (3) इन्टरनेट जिसमें समाचार पत्रों और पत्रिकाओं के इन्टरनेट अंकों के अतिरिक्त ब्लाग और टूवीटर जैसे सामाजिक 'स्थल' भी आते हैं।

इसी तरह प्रकाशन प्रकार और विषय की विशेषता के अनुसार पत्रिकाओं के अंकों को (1)साधारण और (2) विशेष कह सकते हैं।

यह तो पत्रकारिता के प्रकार की बात थी। अब कुछ पूर्णरूप से पत्रकारिक्ता की बात की जाए। अपने विषय, मात्रा और मानक के लेहाज़ से पत्रकारिता ने भी एक सीमा तक प्रगति की है। मीडिया के विकास और संसार के Global गाँव के रूप में उभरने और (कम से कम दावे की हद तक) स्वतन्त्र पत्रकारिता को देखते हुए यह कोई अनहोनी नहीं बल्कि यह विकास हर माने में हर दिशा से वर्तमान स्तर और गुणवत्ता से कहीं अधिक हो सकता था यदि पत्रकारिता अपने असली प्रवाह में रहती। किन्तु ऐसा लगता है कि विश्व पत्रकारिता को दिशा देने वाली कोई बाहूय अदृश्य शक्ति है। आवश्यक्ता भी है, जग की आम चाहत और माँग भी है कि विश्व पत्रकारिता को सत्य का पक्षधर, न्यायवादी और वास्तव में मानवतावादी होना चाहिए। परन्तु विश्व पत्रकारिता है कि सच्चे पत्रकारीय आकांक्षाओं से कटी-कटी सी प्रतीत होती है जिसके 'पंक्तियों के मध्य' में विश्ववादी मानववादी प्रकार की झलक नहीं दिखाई पड़ती। इसके पीछे एक-ध्रुवीय विश्व राजनीति है या आर्थिक ध्रुवीय शक्तियों की धौंस का काम है या कुछ और, पता नहीं, न सही पता लगता मालूम पड़ता है। वैसे यह Writing on wall है जो देखने को है, न कि बताने को। स्थानीय प्रकार की पत्रकारिताओं का होना स्वंय इस बात का जीता जागता सबूत है। (यहाँ 'स्थानीय' का शब्द शहर या बस्ती के आधार पर या भाषाई छुटभय्यों के लेहाज़ से नहीं वरन् विश्व पत्रकारिता की अपेक्षा निचले स्तर और कम

प्रभाव-क्षेत्र की पत्रकारिता के लिए प्रयोग किया गया है।) यह विश्व पत्रकारिता में अपनी तत्सम्बन्धित स्थितियों की असुरक्षा का भाव ही है जिसने स्थानीय पत्रकारिताओं को जन्म दिया है। 'विश्व भाषा' के अतिरिक्त दूसरी भषाओं की पत्रकारिता का अस्तित्व तो समझ में आता है परन्तु 'मुस्लिम पत्रकारिता', 'भारतीय-पत्रकारिता' या 'अफ्रीक़ीय पत्रकारिता' जैसी स्थानीय पत्रकारितओं का सबोध अस्तित्व समझ में नहीं आता। इन अस्तित्वों के माने हैं कि विश्व पत्रकारिता को चाहे जितना संतोषजनक कह लिया जाए, ज़मीन पर अपनी वान्छनीय साख बिठाने में असफ़ल ही रही।

'मुस्लिम पत्रकारिता' और 'भारतीय पत्रकारिता' के सम्बन्ध से लगता है कि इनके पीछे प्रतिक्रियावादी झुकाव या 'कोष्ठक बन्द' या निराशावादी विरोधीय मानसिकता है। (इसके दूसरे कुछ कम महत्वपूर्ण कारण भी हो सकते हैं।) भारत की जनसंख्या या दुनिया में मुस्लिम आबादी (जो लगभग बराबर है) विश्व समाज का बड़ा ही सगण्य अंश बनाती है, फिर भी विश्व पत्रकारिता में 'मुस्लिम' लगभग नदारद हैं और यही बात 'भारतीय' की है। विश्व पत्रकारिता में मुस्लिम या भारतीय की हैसियत अछूत से ज़्यादा नहीं दिखाई देती है। जहाँ मुस्लिम की आम छवि 'आतंकवादी' या फिर संसार से कटे हुए और टोपीधारी निखट्टू से ज़्यादा नहीं, वहीं 'भारतीय' की छवि भी पिछड़े, भिखारी और एक हद तक 'आतंकवाद' को शरण देने वाले से अलग हट कर नहीं उभरती। ऐसे में मुस्लिम पत्रकारिता या भारतीय-पत्रकारिता का अपने वर्तमान रूप में 'विकास' कोई अप्रकृतिक नहीं लगता। खुली हुई बात है कि विश्वपत्रकारिता के सापेक्ष मुस्लिम पत्रकारिता या भारतीय पत्रकारिता लगभग हर तरह से बड़ी दरिद्र है। अपने संसाधनों और कुशलता पूर्ण मानवशक्ति की कमी और उससे पैदा हुई खुली गुणात्मक गिरावट के एहसास के होते हुए भी उनका मैदान में आ जाने का अर्थ हैः

बुद्धु मियाँ भी हज़रते गाँधी के साथ हैं।
गो मुश्ते ख़ाक हैं मगर आँधी के साथ है।।

(यहाँ भारत की स्वतंत्रता से पहले वाले गाँधी जी की बात है।)

अगर उर्दू पत्रकारिता की बात की जाय तो इसे भाषाई मैदान में विश्व पत्रकारिता के समान्तर होना चाहिए, किन्तु माँग और गुण के लेहाज़ से विश्व पत्रकारिता का दर्पण होना चाहिए, मगर वास्तव में ऐसा नहीं है। यहाँ उर्दू को अपने भाषाई सौन्दर्य और आकर्षण को विश्वस्तर पर अंकित करने का अच्छा अवसर भी था, परन्तु......। अब उर्दू पत्रकारिता (दिल्ली और पंजाब क्षेत्रों को कुछ हद तक छोड़कर) पूरी तरह 'मुस्लिम पत्रकारिता' बन चुकी है। यह उर्दू के लिए और स्वयं पत्रकारिता के लिए बड़ा श्राप है। कुछ यही बात है कि उर्दू पत्रकारिता स्वयं उर्दू की बात सुभित्ते से न रख सकी।

हिन्दी पत्रकारिता का हाल भी उर्दू जैसा है। बस अन्तर यह है कि यह बड़ी हद तक 'हिन्दू पत्रकारिता' के रूप में विकसित हुई।

उर्दू पत्रकारिता हो, मुस्लिम पत्रकारिता हो या भारतीय पत्रकारिता हो, उसे अपने वर्तमान ऋणात्मक (Negative) तरीक़े के बजाए 'सामने' आकर दुनिया की आँखों में आँखें डालकर विश्व पत्रकारिता के गुण और 'चरित्र' में विलीन होकर उसे सही दिशा देने में प्रभावी रोल करना चाहिए। 'उर्दू', 'मुस्लिम' और 'भारतीय' सभी क़ायदे से सत्य और न्याय का झण्डा ऊँचा कर सकते हैं। उनमें इसकी आधारभूत योग्यता भी है और यह उनका प्राकृतिक अधिकार भी है। 'भारत' का ज्ञान से सम्बन्ध और मुस्लिम का ज्ञान व क़लम से रिश्ता बड़ा पुराना और 'आवश्यक' है। उर्दू भी एक सक्षम विकासशील और विस्तारोन्मुख ज्ञान-भाषा के रूप में अपना सिक्का जमा चुकी है। (बहुत पहले ही)।

स्थानीय पत्रकारिता के प्रकार में 'शिया' पत्रकारिता का नाम भी लिया जा सकता है (अगर उसे पत्रकारिता का वर्ग दिया जा सके) यहाँ सिर्फ़ भारतीय शिया पत्रकारिता के सम्बन्ध में बात है। जो भी हो शिया पत्रकारिता में 'समाज' से ज़्यादा 'धर्म' छाया हुआ है। इसका कारण जो भी हो, शिया बुद्धजीविता और शिया नेत्रत्व पर उलमा और धर्मगुरुओं का 'प्रभुत्व' और प्रभाव या 'शिया' का धर्मोत्साह, बहरहाल शिया पत्रकारिता

धार्मिक होकर रह गई है। शायद आक़ाए ख़ुमैनी के ईरानी इन्क़ेलाब ने इसके राजनैतिक उत्साहवर्धन और सामाजिक प्रौढ़ता के पीछे बड़े काम का रोल किया है। (मेरे टूटे-फूटे विचार से मज़हब धर्म पत्रकारिता का विषय नहीं बन सकता। इसके माने शिया पत्रकारिता बेमाने निर्थक होकर रह जाती है। इसे शिया पत्रकारिता के बदले शिया 'पत्रिका', संपादन कहा जाय तो कोई आपत्ति नहीं)

इन शिया पत्रिकाओं में सामाजिक (पत्रकारिता सम्बन्धी) छींटें बस शोक समाचार या और भी कम स्तर पर मजलिस, महफिल, जुलूस के समाचार की मुर्दा सी रिर्पोटिंग तक सीमित होते हैं। [शिया पत्रकारिता या शिया पत्रिकाओं की समाज से ये मुँह फिराई यहीं तक सीमित नहीं है बल्कि (कम से कम भारत में) शिया धर्मशास्त्र के प्रथिमिकी/प्राइमरों में भी यही कुछ मिलता है। कुछ यही कारण है कि इबादत की आम धारणा रोज़ा नमाज़ में सीमित होकर रह गयी है।]

अन्त में आज की ताज़ा ख़बरः आज का नया समाचार, एक नये साप्ताहिक 'वायज़' का आगमन.... .... स्वागतम! इस बारे में 'नूरे हिदायत फ़ाउण्डेशन', लखनऊ पूरी उम्मीद से है। आशा है यह वायज़ कम से कम उर्दू शायरों वाले वायज़ (उपदेशक) की छवि से अलग होगा। इसके प्रकाशन पूर्व विज्ञापन से यह पता चलता है कि इसके संस्थापकों के विचार में इसे 'दस्तावेज़ी' Documentry तरह से शिया इन्साईक्लोपीडिया का रूप देना है। एक साप्ताहिक में (धरावाहक) इन्साइक्लोपीडिया (विश्वकोष) का आकार उभारन बड़ा साहसिक क़दम और इन्क़ेलाबी सोच है। इस सम्पादकीय कार्य को जनता की नज़र क्या मान देती है इसके बारे में कुछ कहना समय से पूर्व है। दुआ तो हर स्थिति में की जा सकती है। फिर उक्त पत्रिका शायद इस 'दस्तावेज़ी' आकार में सीमित न रहेगी, बल्कि इसका सामाजिक कोण भी होगा जैसा कि पत्रिका के नामित सम्पादक महोदय ने अपनी एक बातचीत में अभिव्यक्त किया है कि इसमें 'ऋणात्मक' सामाजिक पहलू बिल्कुल नहीं होगा। यानी शियों के आपसी भेदभाव जो उनके भाग्य बन चुके हैं उन्हें दरकिनार कर दिया जायेगा, विरोक्ष पक्ष को भी साथ लिया जायगा। पत्र की हद तक भेदभाव को मार दिया जायगा। यह बड़ा ही नेक पुण्य काम है। पत्रकारिता भेदभाव को हवा देने के लिए नहीं, उसे हवा करने के लिए होती है।

मुझे निजी रूप से सबसे ज़्यादा इसी की ख़ुशी होगी कि 'वायज़' अपने एकता (एकजुटता) अवतार में पूरे शिया समाज को साथ लेकर चले और अपनी उन्नति के चरण को पूरा करे कि अन्ततः इससे शिया लेबिल भी छुट जाय और सच्चा मानवीय/विश्व अन्दाज़ उभर आये।

'वायज़' के स्वागत को साक्षात अपेक्षा बन कर आशा करता हूँ कि 'वायज़' किसी भी तरह हमारे शायरों के ताने वाला 'वायज़' न हो। चलते-चलते दुआ हैः-
'अल्लाह करे लेखनी बल (और भरम) और ज़्यादा'



कर्बला की घटना

जनाब मिर्ज़ा सज्जाद हुसैन साहब

सत्य और असत्य की शक्तियों में सदैव टकराव होता रहा है, प्रकाश व अंधकार सृष्टि की रचना से आज तक कमागत रूप से संघर्षमय है परन्तु किसी सत्य व असत्य की लड़ाई में वह आकर्षण स्थायित्व और सार्वभौमिकता नहीं है जो कर्बला के युद्ध में है। निःसन्देह कर्बला की घटना केवल इस्लामी इतिहास भी है और अविसमरणीय भी।

कर्बला की घटना का प्रारम्भ इस प्रकार हुआ कि जब 60 हिजरी में माविया के देहान्त के उपरान्त यज़ीद ने राज्य सिंहासन ग्रहण किया तो उसने इमाम हुसैन से स्वयं को धार्मिक अधिष्ठता स्वीकार कर लेने को कहा। स्पष्ट है कि इमाम हुसैन[अ॰] का ऐसा आदर्श व्यक्ति यज़ीद के ऐसे दुराचारी व कुकर्मी व्यक्ति को अपना आध्यात्मिक नेता कैसे मान सकते थे, अतएव इमाम हुसैन[अ॰] ने उसे धार्मिम अधिष्ठता मानने से इन्कार कर दिया। इसके बाद इमाम हुसैन[अ॰] मक्का हज के लिए रवाना हुए परन्तु मक्के में भी यज़ीद की ओर से कुछ व्यक्ति हाजियों के भेष में भेजे गए थे कि वह इमाम हुसैन[अ॰] को कहीं पाते ही उनकी हत्या कर डालें। यथाकरण इमाम हुसैन[अ॰] हज से एक दिन पूर्व कर्बला की ओर रवाना हो गए। जब सम्पूर्ण विश्व से सिमट-सिमट कर मुसलमान काबे में जमा हो रहे थे तो काबे के सम्मान का संरक्षक हुसैन[अ॰] उसी काबे के आदर व महिमा को सदैव के लिए सुरक्षित रखने हेतु इराक़ की ओर प्रस्थान कर रहा था। इमाम हुसैन[अ॰] रास्ते ही में थे कि हुर की सेना मिलती है जो प्यासी दृष्टि गोचर होती है (यह सेना इमाम हुसैन[अ॰] के विरोधियों एवं शत्रुओं की थी) इमाम हुसैन[अ॰] ने उस समय अत्यन्त हृदय विशालता, उदारता एवं दानशीलता का परिचय इस प्रकार दिया कि उस मरुस्थल में जहाँ इमाम की जान की क़ीमत और पानी की क़ीमत लगभग समान होती है, अपने साथ का सब पानी हुर की सेना को पिलवा दिया और फिर इमाम हुसैन[अ॰] के प्रतिभाशाली व्यक्तिव की यह बात भी अविस्मरणीय है कि जब कर्बला पहुँचने पर सावतीं मुहर्रम से यज़ीद की सेना ने इमाम हुसैन[अ॰] और उनके साथियों पर पानी बन्द कर दिया तो इमाम हुसैन[अ॰] के किसी बच्चे ने भी यह नहीं कहा कि कल हम ने तुम्हें पानी पिलाया था, इसलिए तुम आज हमें पानी पिला दो। इसका कारण यह था कि इमाम हुसैन[अ॰] यह बताना चाहते थे कि वह तो हमारे चरित्र की पराकाष्ठा थी कि तुम जब प्यासे थे, तो हम ने तुम्हें पानी पिला दिया था परन्तु यह तुम्हारे चरित्र की हीनता है कि यद्यपि हम समय पर तुम्हारी प्यास बुझा चुके हैं परन्तु तुम हमें ही पानी पिलाने से इन्कार कर रहे हो।

इसी उदारता एवं हृदय विशालता का परिचय देते हुए आप दो मुहर्रम को कर्बला पहुँच गए और आपको नदी से दूर ख़ेमे लगाने पर बाध्य कर दिया गया। मुहर्रम की सात तारीख़ से इमाम हुसैन[अ॰] और उनके साथियों पर पानी बन्द कर दिया गया। 7 मुहर्रम की रत्रि आई। युद्ध आरम्भ होने ही वाला था कि इमाम हुसैन[अ॰] ने हज़रत अब्बास[अ॰] से कहा जाओ और इन यज़ीदियों से कह दो कि हमें एक रत्रि का समय और दे दें जिस से हम अपने पालनहार ईश्वर को अपनी प्रार्थनाओं एवं भक्तियों द्वारा प्रसन्न कर लें। केवल इतना ही नहीं अपितु इस रत्रि में इमाम हुसैन[अ॰] ने अपने साथियों की वफ़ादारी की परीक्षा भी ले ली और फ़रमाया कि मेरे साथियो। मैं तुम से अपनी बैअत (अर्थात तुम ने मुझे जो धार्मिक अधिष्ठाता स्वीकार किया है) अलग करता हूँ तुम में से जो चाहे चला जाए। फिर कहा कि यदि किसी को इस प्रकार जाने में लज्जा का बोध हो रहा हो तो देखो मैं दीपक बुझाए देता हूँ, अब जिसको जाना हो चला जाए परन्तुः-

हुसैन इब्ने अली ने फ़ितरतें बदली हैं एक शब में।
बुझी है शमा और महफ़िल से परवाने नहीं जाते।।

कोई उठकर न गया बल्कि इमाम हुसैन[अ॰] के साथी यह कहते हुए दृष्टिगोचर होते हैं कि आपकी मुहब्बत में एक बार क़त्ल होना कैसा हमें सत्तर बार भी क़त्ल किया जाए और हमारी ख़ाक हवा में उड़ा दी जाए और हमें फिर ज़िन्दगी मिले तब भी हम आप पर जीवन बलिदान करने को अपने लिए गौरव का विषय समझेंगे। निःसन्देह इमाम हुसैन के साथियों के चरित्र को देखेने के

बाद हमें कहना पड़ता है कि कर्बला में दिल बहत्तर थे धड़कन एक थी, शरीर बहत्तर थे आत्मा एक थी, ख़ून अलग-अलग थे परन्तु तड़प एक थी।

दसवीं मुहर्रम की सुबह आई। इमाम हुसैन अ० और उनके साथी नमाज़ के लिए खड़े हुए यज़ीद की सेना युद्ध के लिए तैयार हुई। एक ओर सुबह की सफ़ेदी थी दूसरी ओर शाम का अंधकार, एक ओर धूल पर तयम्मुम (नमाज़ के पहले यदि वज़ू करने के लिए पानी उपलब्ध न हो तो धूल पर एक विशेष प्रकार से हाथ मार कर मुँह पर मलने को तयम्मुम कहा जाता है) हो रहा था, दूसरी ओर घोड़ों को पानी पिलाया जा रहा था। एक ओर नमाज़ पढ़ने के लिए लोग पंक्तिबद्ध हो रहे थे, दूसरी ओर युद्ध के लिए तत्परता दिखायी जा रही थी, एक ओर रुकू (नमाज़ पढ़ने में झुकना) हो रहे थे, दूसरी ओर कमानें (धनुष) लचक रहे थे, एक ओर मानव-चरित्र को उच्चतम बनाने वाले सजदे (नमाज़ में शीश नवाना) थे, दूसरी ओर धुरात्मक रूप से सिर ऊँचे उठे हुए थे, एक ओर स्थायी सफ़लतता, इमाम हुसैन अ० के साथियों के मुख ज्योतिमान व प्रकाशित किए हुए थी, दूसरी ओर धन व एश्वर्य के खोटे सिक्के आँखों को चकाचौंध कर रहे थे। यहाँ तक कि यज़ीद की सेना की ओर से एक तीर युद्ध का संदेश लेकर आ गया। युद्ध आरम्भ हुआ। अपराह्न तक इमाम हुसैन अ० के समस्त साथी व सम्बन्धी शहीद हो गए। हज़रत अली अकबर अ० के चाँद से सीने पर बरछी लगी हज़रत क़ासिम अ० का शव घोड़ों की टापों से रौंद डाला गया, हज़रत अब्बास अ० के बाज़ू कटे, हज़रत अली असग़र अ० के गले पर तीर लगा। अब इमाम हुसैन अ० स्वयं सेना के सामने आए। फ़रमा रहे हैं कि बताओ मेरे क़त्ल का क्या औचित्य है? क्या मैंने धर्म में कुछ परिवर्तन किया है, क्या मैंने किसी की धन-सम्पत्ति पर अनाधिकृत रूप से अधिकार जमाया है? क्या मैंने किसी पर किसी प्रकार का अत्याचार किया है? इमाम हुसैन अ० के इस कथन पर हज़रत अली अकबर अ० के क़ातिल, हज़रत अली असग़र अ० के क़ातिल, इमाम हुसैन अ० के परिवार को नष्ट करने वाले यह कहते हुए दृष्टिगोचर होते हैं कि हुसैन तुमने कोई पाप या अत्याचार नहीं किया है। हुसैन अ० के कहने का भी उद्देश्य यही था कि दुनिया देख ले कि मेरे क़ातिल भी इस बात को स्वीकार कर रहे हैं कि हम आपको क़त्ल कर सकते हैं परन्तु आपकी चरित्र की पराकाष्ठा से इनकार नहीं कर सकते। तदोपरान्त इमाम हुसैन अ० पर तीर व व तलवार के वार होने लगे। अंततः इमाम हुसैन अ० प्रहारों से चूर होकर घोड़े से ज़मीन पर आ गए दुष्ट पापी शिम्र ने हुसैन अ० का सिर काट लिया। फ़ुरात का पानी उछलने लगा, काली आँधी चलने लगी, वातावरण अंधकार पूर्ण हो गया और आवाज़ें आ रही थीं ''हुसैन अ० क़त्ल कर दिए गए'', ''हुसैन अ० शहीद कर दिये गए''।



शेष...... है शबाब अपने लहू की आग..........

को लिए हुए ख़ेमे की तरफ़ आ रहे हैं। अब्बास अ० भी साथ हैं अली अकबर अ० भी साथ हैं। सैय्यिद-ए-आलम हज़रत फ़ातिमा ज़हरा स० की बूढ़ी कनीज़ फ़िज़्ज़ा दौड़ी हुई शाहज़ादी के पास आई और क़दमों पर सर रखकर बोली, मेरी शाहज़ादी! आपके बेटे मारे गए। ज़ैनब स० ने आसमान को देखा और सर ख़ालिक़ के सजदे में झुका दिया और खुदा के दरबार में अर्ज़ कीः मेरे अल्लाह तेरा शुक्र कि मैं कामयाब हो गई। मेरे भाई के क़दमों पर मेरी कमाई क़ुर्बान हुई।

एक वक़्त वह भी आया जब इमाम हुसैन अ० का 32 साल का शेरदिल भाई अबुलफ़ज़लिल अब्बास अ० मैदान में आया और एक ही हमले में इब्ने साद की टिड्डी-दल फ़ौज की सफ़ें तोड़ डालीं और नहर में घोड़ा डाल दिया। मगर जब सकीना की मश्क नहर से भर कर ख़ेमे की तरफ़ जाने लगे तो पूरी फ़ौज ने तीरों, तलवारों और नेज़ों से हमला कर दिया अली अ० का बहादर बेटा ज़ख़्मी होकर घोड़े से गिरा। अलमदारे लश्करे हुसैनी को गिरते हुए देखकर इमाम हुसैन अ० ने अपनी कमर थाम ली और फ़रमाया अब्बास अ०! तुम्हारे मरने ने मेरी कमर को तोड़ दिया।

फिर इस सूरज ने वह मन्ज़र भी देखा जब इमाम हुसैन अ० का अटठारह साल का ख़ूबसूरत बेटा अली अकबर अ० मैदान में आया। इमाम अ० ने आसमान पर नज़र फ़रमाई और खुदा के दरबार में अर्ज़ की। ऐ मेरे परवरदिगार! तू गवाह रहना कि अब जंग के मैदान में मेरा वह ख़ूबसूरत बेटा जा रहा है जो तेरे रसूल स० की बिल्कुल तस्वीर है।

अली अकबर अ० ने बेपनाह जंग की मगर किसी ज़ालिम ने छुप कर बरछी का वार किया और शहज़ादा तेवरा कर ज़मीन पर गिरा। माँ हज़रत लैला और फूफी हज़रत ज़ैनब ख़ेमे के दरवाज़े पर खड़ी हैं। इमाम आली मक़ाम नौजवान की लाश पर आ गए। अली अकबर अ० अपने ख़ून में एड़ियाँ रगड़ रहे हैं, बूढ़े बाप ने नौजवान बेटे के गाल पर अपना गाल रख दिया और आसमान की तरफ़ मुँह करके आवाज़ दी ऐ मेरे चाँद! तेरे बाद अब इस दुनिया की ज़िन्दगी पर ख़ाक है।

मुख्य समाचार

बाबरी मस्जिद के लिए सुन्नी सेन्ट्रल वक़्फ़ बोर्ड ने

सुप्रीमकोर्ट में अपील दायर की

सुन्नी सेण्ट्रल वक़्फ़ बोर्ड ने इलाहाबाद हाईकोर्ट की लखनऊ बेंच के बाबरी मस्जिद केस में फैसले को सुप्रीमकोर्ट में चैलंज कर दिया है। इस अपील में सुन्नी सेन्ट्रल वक़्फ़ बोर्ड ने कहा है कि हाईकोर्ट के फ़ैसले की बुनियाद एक तबक़े के मज़हबी अक़ीदे पर है न मुल्क के क़ानून के मुवाफ़िक़ है न ज़बानी व दस्तावेज़ी शहादतों के मुताबिक़। आल इण्डिया मुस्लिम पर्सनल लॉ बोर्ड की एक प्रेस रिलीज़ के मुताबिक़ सुन्नी सेन्ट्रल वक़्फ़ बोर्ड ने कहा है कि इस फैसले में हाईकोर्ट ने सरकारी रिकार्डों को भी नज़रअन्दाज़ किया है। अपील दाख़िल करने का काम चार नुमायां वकीलों ज़फ़रयाब जीलानी, राजीव धवन, शकील सैय्यद और एम०आर० शमशाद ने मुकम्मल किया है। इस अपील में इलाहाबाद हाईकोर्ट के तीनों जजों जस्टिस एस० यू० ख़ान, जस्टिस सुधीर अग्रवाल और जस्टिस डी० वी० शर्मा के फ़ैसलों का तनक़ीदी जायज़ा लेते हुए बताया गया है कि हाईकोर्ट का फ़ैसला ग़ैर क़ानूनी, आपस में टकराने वाला और हिन्दुस्तानी आइन के बुनियादी तसव्वुरात के ख़िलाफ़ है।

सीस्तान की मस्जिद के बाहर ख़ुदकश हमले में

40 लोग हलाक

ईरान के सूब-ए-सीस्तान ब्लोचिस्तान में चाहे बहार की एक मस्जिद के बाहर ख़ुदकश धमाके में कम से कम 40 लोग हलाक हो गए। ईरान की सरकारी ख़बर देने वाली एजेंसी 'इरना' के मुताबिक़ ये धमाका इमाम हुसैन मस्जिद के बाहर हुआ। ख़बरों के मुताबिक़ हमला आवर दो लोग थे जिनमें से एक को हिरासत में लिया गया है। पाकिस्तान के सूब-ए-ब्लोचिस्तान से मुत्तसिल इस इलाक़े में अक्सरियती आबादी सुन्नी है और यहाँ पर शिया तक़रीबात को कई बार हमलों का निशाना बनाया गया है। अभी तक किसी ने ख़ुदकश हमले की ज़िम्मेदारी क़ुबूल नहीं की और तफ़सीलात भी पूरी तरह सामने नहीं आईं। सरकारी टेलीवीज़न पर कहा गया है कि दो धमाके हुए लेकिन बाद में एक आला अहलकार ने कहा कि सिर्फ़ एक धमाका हुआ। माज़ी में ऐसे हमलों की ज़िम्मेदारी अस्करियत पसंद तंज़ीम जुन्दुल्लाह ने क़ुबूल की थी। जुन्दुल्लाह ने जुलाई में सूबाई दारुलहुकूमत ज़ाहिदान में एक शिया मस्जिद पर बम हमले की ज़िम्मेदारी क़ुबूल की थी जिसमें 27 लोग हलाक हुए थे। उनका कहना था कि वह हमला जुन्दुल्लाह के रहनुमा अब्दुल मालिक रेगी को फ़ांसी दिये जाने पर तंज़ीम का जवाबी रद्दे अमल था।

मदीने में शियों और सुन्नियों के दरमियान झगड़ा

आशूरा के मौक़े पर मदीना-ए-मुनव्वरा में शिया और सुन्नियों के दरमियान झगड़ा हो गया जिसके बाद सलामती कौंसिल को उन्हें मुन्तशिर करना पड़ा। सऊदी अरब के लोग वहाबी मसलक के पैरोकार हैं और अक़लियती शिया फ़िरक़े का कहना है कि शाह अब्दुल्लाह की इस्लाहात के बाद अब उनकी हालत थोड़ी बेहतर हो गई है मगर अब भी उनके साथ इम्तियाज़ बरता जाता है और उन पर कई तरह की पाबन्दियाँ लगी हुई हैं। सरकार इन इल्ज़ामों से इंकार करती है। शिया वेबसाइट राशिद डाट काम का कहना है कि जब मदीने में मोहर्रम का जुलूस निकाला जा रहा था तो सुन्नियों के एक मक़ामी ग्रुप ने उन पर पथराव किया। एक मक़ामी शिया बाशिंदे ने भी इस वाक़िए की तस्दीक़ की है और बताया है कि ये वाक़िआ तारीख़ी मस्जिद क़ुबा के नज़दीक पेश आया। सऊदी अरब के शिया फ़िरक़े को शिकायत है कि वह मशरिक़ी सूबे के कुछ हिस्सों में जहाँ वह अक्सरियत में हैं, उन्हें अज़ा के दिनों में भी सरेआम जल्से जुलूस का एहतेमाम करने की इजाज़त नहीं है। एक सहाफ़ी ने नाम न ज़ाहिर करने की शर्त पर बताया है कि 'सलामती दस्ते मजमे को मुन्तशिर करने पहुँच गए थे तभी से मदीने में सख़्त पहरा लगा दिया गया, पुलिस गलियों में गश्त कर रही है। हालाते हाज़िरा की सऊदी वेबसाइट सबक़ ने एक मक़ामी पुलिस तर्जुमान के हवाले से कहा है कि दो नौजवान ग्रुपों के दरमियान बहस व तकरार हो गई। झगड़े में एक दूसरे पर पत्थर फेंकने पर पुलिस को मदाख़लत करनी पड़ी। तरजुमान मोहसिन रिज़ाई के हवाले से कहा गया है कि सूरते हाल अब ठीक है। वेब साइट पर मौक़े पर जाती एक एम्बुलेंस दिखाई गई है। सऊदी में 10 फ़ीसद शिया हैं मगर सिफ़ारत कार 15 फ़ीसद बताते हैं। शीआने आले मुहम्मद का कहना है कि वहाबी उलमाए दीन शियों पर तंक़ीद करते रहते हैं इस वजह से सरकारी नौकरियाँ हासिल करने में परेशानी होती है। उनका कहना है कि उनके साथ नारवा सुलूक हो रहा है मगर हुकूमत इन इल्ज़ामों से इन्कार करती है।

हिज़्बुल्लाह की बहादरी के सामने ग्रेटर इस्राईल के वजूद का ख़ात्मा

यौमे आशूरा की मजलिस में अरब मुमालिक की सोच की मज़म्मत

हिज़्बुल्लाह लेबनान के सरबराह सै० हसन नस्रुल्लाह ने कहा है कि वह इस्राईल जिस से सब डरा करते थे उसका कोई वुजूदे ख़ारजी नहीं है। सै० हसन नस्रुल्लाह ने शबे आशूर की मजलिस से ख़िताब करते हुए कहा कि जो चीज़ ग्रेटर इस्राईल कहलाती थी वह हिज़्बुल्लाह की बहादुरी व इस्तेक़ामत से ख़त्म हो चुकी है और सहयूनियों की ये आरज़ू कभी पूरी नहीं होगी। उन्होंने सहयूनी हुकूमत के मुक़ाबिल हिज़्बुल्लाह की कामयाबियों का ज़िक्र करते हुए कहा कि सहयूनी हुकूमत इससे कहीं ज़्यादा कमज़ोर है कि इलाक़े के बाशिंदों पर अपनी शर्तें मुसल्लत कर सके। सै० हसन नस्रुल्लाह ने बाज़ अरब मुल्कों की मज़म्मत करते हुए कहा कि जिन मुल्कों ने 2006 में 33 रोज़ जारहियत में सहयूनी हुकूमत की हिमायत की थी वह भी शिकस्त खाने वाले गिरोह में शामिल हैं। उन्होंने कहा कि हिज़्बुल्लाह ने सहयूनी हुकूमत के राडारों और जासूसी की मशीनों को ढूँढ निकाला है। उन्होंने कहा कि सहयूनी हुकूमत साज़बाज़ मुज़ाकरात के बहाने वक़्त बर्बाद करना चाहती है। सै० हसन नस्रुल्लाह ने कहा कि सहयूनी हुकमत क़ुद्स शरीफ़ को यहूदी बनाने पर लगी हुई है और सहयूनी कभी भी अमन व सुलह नहीं चाहते हैं। हिज़्बुल्लाह लेबनान के सरबराह ने कहा कि सहयूनी हुकूमत यहाँ शिया-सुन्नी, इराक़ में कुर्द-अरब और मिस्र में ईसाईयों और मुसलमानों के दरमियान तफ़रक़ा फैलाने की कोशिश कर रही है जिसके मुक़ाबिल हमें होशियार रहना चाहिए। सै० हसन नस्रुल्लाह ने ईरान के शहर चाबार में होने वाले दहशतगर्दाना हमलों की मज़म्मत की और कहा कि इस तरह के इक़दामात से मुसलमानों में फ़ितने और तफ़रक़े फैलाने की कोशिश की जा रही है। उन्होंने ईरान की ख़िलाफ़ पाबन्दियों को बेअसर क़रार दिया और कहा कि इन पाबन्दियों से ईरान में तरक़्क़ी आयेगी और वह ताक़तवर बनेगा। उन्होंने मग़रिबी मुल्कों के दोहरे रवैय्यों की मज़म्मत की।

इस्राईल ने एक हफ़्ते में फ़िलिस्तीनियों की 47 इमारते गिरा दीं

अक़वामे मुत्तहेदा ने बराए इंसानी तआवुन की ताज़ा रिपोर्ट के मुताबिक़ इस्राईली सेक्योरिटी और सिविल इंतिज़ामिया के ज़ेरे इन्तेज़ाम मग़रिबी किनारे में गुज़श्ता एक हफ़्ते के दौरान तामीराती इजाज़तनामा हासिल न कर सकने का बहाना बनाकर फिलिस्तीनियों की ज़ेरे मिलकियत 47 इमारतें गिरा दी हैं। मरकज़े इत्तेलाआते फिलिस्तीन के मुताबिक़ क़ाहिरा में अक़वामे मुत्तहेदा के मीडिया सेण्टर की जानिब से तक़सीम की गई रिपोर्ट में कहा गया है कि गिराई गई इमारतों में से 43 इमारतें उन रिहाईशी आबादियों में थीं जिन्हें फौजी ममनूआ इलाक़े में क़रार दिया गया है। ये इलाक़े इन्तेहाई हस्सास क़रार दिये जाते हैं। आठ दिसम्बर ता चौदह दिसम्बर के आदादो शुमार पर मुश्तमिल रिपोर्ट के मुताबिक़ नाबुलस के गाँव ख़रबा ताना में 11 रिहाइशी यूनिट्स और 17 जानवरों के बाड़ों समेत 29 इमारतों को बर्बाद कर दिया गया जिस से 13 बच्चों समेत कम से कम 17 लोग हिजरत पर मजबूर हो गए और 22 स्कूल जाने वाले बच्चों समेत दूसरे 100 लोगों को सख़्त दुश्वारी का सामना करना पड़ा है। रिपोर्ट में कहा गया है कि सन् 2005 ई० से अब तक इस गाँव को तीसरी बार गिराया गया है। आलमी इदारे के मुताबिक़ इस्राईली जारहियत का शिकार होने वाली इमारतों में ज़िल अलख़लील के दो देहाती इलाक़ों उम्मुद्दरज और ख़्शमुद्दरज के 14 कुँऐं भी शामिल हैं। जिस से 960 लोगों के साथ-साथ चार हज़ार से ज़ायद मवेशी भी मुतास्सिर हुए हैं। वादी उरदुन में सब्ज़ियाँ और फ़ल बेचने वाले चार स्टाल भी तोड़ दिये गये हैं, कारवाईयों में चार ख़ानदानों को शदीद नुक़सान के अलावा आठ पेड़ भी उखाड़ फेंके गये हैं। वाज़ेह रहे कि सहयूनी फ़ौज ने इस अरसे में फिलिस्तीनियों के ज़ेरे मिलकियत 6 घरों की तामीर रोकने के हुक्म नामे जारी किये जिनमें ज़िला सलफ़ेत के गाँव हारस में ज़ेरे तामीर घर, देरात गाँव में एक इलेक्ट्रिक गेट और रामअल्लाह के गाँव देर अबु मशाल की चार इमारतें शामिल हैं। रिपोर्ट के मुताबिक़ दौराने हफ़्ता इस्राईली हुक्काम ने 46 लोगों पर मुश्तमिल चार ख़ानदानों की बेदख़ली के अहकामात सादिर किये। 30 बच्चों पर मुश्तमिल इन ख़ानदानों का ताल्लुक़ जिला रामअल्लाह के गाँव अलमुग़ीर की मज़ाफ़ाती आबादी से था, सहयूनी हुक्काम ने इन ख़ानदानों की ममनूआ फ़ौजी इलाक़े में मौजूदगी को इलाक़ा बदरी का जवाज़ बनाया। इसके अलावा इस्राईली हुक्काम ने मश्रिक़ी अलक़ुद्स के इलाक़ों रासुल उमूद और सूर बाहर में भी दो घरों को तोड़कर 14 लोगों को बेघर करके खुले आसमान के नीचे रहने पर मजबूर किया है।